जीरा उत्पादकों के साथ सह संवाद बैठक, चतुर्थ पंचवर्षीय समीक्षा टीम ने भ्रमण किया

दिव्य पंचायत न्यूज नेटवर्क/अर्जुन दर्जी

गुडामालानी। डिस्ट्रिक्ट कृषि विज्ञान केंद्र में उक्त टीम ने किसानों के साथ संवाद किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. बी.एस. चुंडावत पूर्व कुलपति एसकेडीए विश्वविद्यालय व चेयरमैन क्यू.आर.टी. ने बताया कि प्रदेश के पश्चिमी जिलों के बहुसंख्यक किसानों की आजीविका जीरे की फसल पर निर्भर करती है क्योंकि यह कम समय अवधि और न्यूनतम लागत में अधिक आमदनी देने वाली फसल है देश का कुल उत्पादन में से सर्वाधिक 80 प्रतिशत जीरा राजस्थान एवं गुजरात में उगाया जाता है भारत में जीरा उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान तथा उत्पादकता में गुजरात का प्रथम स्थान है जबकि राजस्थान में जीरे की औसतन उपज 380 किलोग्राम प्रति हैक्टर है जो कि काफी कम है। डॉ. एस. एन. सक्सेना निदेशक एनआरसीएसएस अजमेर ने बताया कि वर्तमान समय में पश्चिमी राजस्थान में मसाला फसलों की तरफ लोगों का रुझान दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है इसके लिए उन्नत किस्म के साथ साथ ही बीज उपचार करने की आवश्यकता बताई। डॉ वाई.के. शर्मा प्रधान वैज्ञानिक एवं सदस्य क्यूआरटी टीम ने बताया कि पश्चिमी राजस्थान प्रमुख जीरा उत्पादक क्षेत्र है जिसमें भविष्य में इसके बढ़ने की अपार संभावनाएं हैं। डॉ प्रदीप पगारिया सह-निदेशक, प्रसार शिक्षा निदेशालय व उप-कुलसचिव कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर ने आये हुए अतिथियों का परंपरागत स्वागत करते हुए जिले की रूपरेखा के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की व जिले में होने विभिन्न फसलों, के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। साथ ही उन्होंने कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा विकसित विभिन्न नवीन तकनीकों के बारे में भी बताया। डॉ. रामावतार शर्मा प्रधान वैज्ञानिक आईसीएआर काजरी व क्यूआरटी सदस्य ने बताया की पश्चिमी राजस्थान मसाला फसलों के लिए बहुत ही अनुकूल पर्यावरणीय स्थिति है तथा भविष्य में भी इस क्षेत्र में मसाला फसलों के उत्पादन में वृद्धि की अपार संभावनाएं हैं।

डॉ. राजेश शर्मा पूर्व-अधिष्ठाता स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बिकानेर व क्यूआरटी सदस्य ने बताया कि किसानों की आय दुगुनी करने में सबसे बड़ी आवश्यकता है लागत को कम करें एवं जेविक उत्पादन भी किसानों की आय दुगनी करने में अहम भूमिका निभाई जा सकती है। साथ ही उन्होंने समन्वित कृषि प्रणाली प्रबंधन पर विशेष ध्यान देंने की बात करते हुए कहा कि आने वाला समय में समन्वित कृषि प्रणाली किसानों की आय एवं उत्पादन बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगा। इससे जलवायु में हो रहे बदलाव का असर भी कम किया जा सकता है। डॉ. ए.वी. अगलोदिया एसकेडीएयू दांतीवाड़ा व क्यूआरटी सदस्य ने किसानों को जीरा उत्पादन में आ रही विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की। डॉ बीएल मीणा ने सभी सम्मानीय अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि केवीके गुडामालानी किसानों की आय दोगुनी करने के लिए समय पर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित कर रहा है साथ ही किसानों की आवश्यकता के अनुसार उन को प्रशिक्षण देकर खेती में आने वाली विभिन्न बीमारियों के उपचार के लिए भी जानकारी प्रदान कर किसानों की आय बढ़ाने में एक मुख्य भूमिका निभा रहा है।

डॉ. मुरलीधर मीणा, वैज्ञानिक एनआरसीएसएस अजमेर ने जीरा उत्पादन का आर्थिक महत्व के बारे में विस्तार से बताया। डॉ.नरेन्द्र चैधरी वैज्ञानिक एनआरसीएसएस अजमेर ने जीरा के जैविक उत्पादन पर किसानों को विस्तार पूर्वक बताया। अंत में डॉ.बाबूलाल जाट ने आये हुए अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

केवीके में जीरा उत्पादकों के साथ सह संवाद बैठक

'किसानों की आजीविका जीरे की फसल पर निर्भर'

नवज्योति/गुड़ामालानी। कृषि विज्ञान केंद्र गुड़ामलानी पर पश्चिमी राजस्थान के जीरा उत्पादकों के साथ सह संवाद बैठक की चतुर्थ पंचवर्षीय समीक्षा टीम क्यूआरटी टीम ने भ्रमण किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ बीएस चुंडावत पूर्व कुलपति एसकेडी, विश्वविद्यालय व चेयरमैन क्यूआरटी ने बताया कि प्रदेश के पश्चिमी जिलों के बहुसंख्यक किसानों की आजीविका जीरे की फसल पर निर्भर करती है क्योंकि यह कम समय अवधि और न्यूनतम लागत में अधिक आमदनी देने वाली फसल है। डॉ एसएन सक्सेना निदेशक एनआरसीएसएस अजमेर ने बताया कि वर्तमान समय में पश्चिमी राजस्थान में मसाला फसलों की तरफ लोगों का रुझान दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है इसके लिए उन्नत किस्म के साथ ही बीज उपचार करने की आवश्यकता बताई।

चतुर्थ पंचवर्षीय समीक्षा, क्यूआरटी टीम ने भ्रमण किया

नवीन तकनीकों के बारे में भी बताया

डॉ वाईके शर्मा प्रधान वैज्ञानिक एवं सदस्य क्यूआरटी टीम ने बताया कि पश्चिमी राजस्थान प्रमुख जीरा उत्पादक क्षेत्र है जिसमें भविष्य में इसके बढ़ने की अपार संभावनाएं हैं। डॉ प्रदीप पगारिया सह.निदेशक प्रसार शिक्षा निदेशालय व उप.कुलसचिव कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर ने अतिथियों का परंपरागत स्वागत करते हुए जिले की रूपरेखा के बारे में जानकारी दी। जिले में होने विभिन्न फसलों के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। उन्होंने कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा विकसित विभिन्न नवीन तकनीकों के बारे में भी बताया। डॉ रामावतार शर्मा प्रधान वैज्ञानिक आईसीएआर काजरी व क्यूआरटी सदस्य ने बताया की पश्चिमी राजस्थान मसाला फसलों के लिए बहुत ही अनुकूल पर्यावरणीय स्थिति है तथा भविष्य में भी इस क्षेत्र में मसाला फसलों के उत्पादन में वृद्धि की अपार संभावनाएं हैं।

किसानों की उत्पादन बढ़ाने में अहम भूमिका

डॉ राजेश शर्मा पूर्व.अधिष्ठाता स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर व क्यूआरटी सदस्य ने बताया कि किसानों की आय दुगुनी करने में सबसे बड़ी आवश्यकता है लागत को कम करें एवं जैविक उत्पादन भी किसानों की आय दुगनी करने में अहम भूमिका निभाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि आने वाला समय में समन्वित कृषि प्रणाली किसानों की आय एवं उत्पादन बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगा। डॉ एवी अगलोदिया एसकेडीएयू दांतीवाड़ा व क्यूआरटी सदस्य ने किसानों को जीरा उत्पादन में आ रही विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की।

जीरा उत्पादन के आर्थिक महत्व के बारे में दी जानकारी

डॉ बीएल मीणा ने सभी सम्मानीय अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि केवीके गुडामालानी किसानों की आय दोगुनी करने के लिए समय पर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित कर रहा है साथ ही किसानों की आवश्यकता के अनुसार उन को प्रशिक्षण देकर खेती में आने वाली विभिन्न बीमारियों के उपचार के लिए भी जानकारी प्रदान कर किसानों की आय बढ़ाने में एक मुख्य भूमिका निभा रहा है। डॉ मुरलीधर मीणा, वैज्ञानिक एनआरसीएसएस अजमेर ने जीरा उत्पादन का आर्थिक महत्व के बारे में बताया। डॉ नरेन्द्र चौधरी वैज्ञानिक एनआरसीएसएस अजमेर ने जीरा के जैविक उत्पादन पर किसानों को बताया। अंत में डॉ बाबूलाल जाट ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

जीरा न्यूनतम लागत में अधिक आमदनी देने वाली फसल

जीरा उत्पादकों के साथ सह संवाद बैठक की चतुर्थ पंचवर्षीय समीक्षा टीम (क्यूआरटी) टीम ने किया भ्रमण

सबसिटी सुपरफास्ट

गुड़ामालानी। पश्चिमी राजस्थान के जीरा उत्पादकों के साथ सह संवाद बैठक की चतुर्थ पंचवर्षीय समीक्षा टीम (क्यूआरटी) टीम ने भ्रमण किया। इस दौरान टीम ने किसानों के साथ संवाद किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. बी.एस. चुंडावत पूर्व कुलपति एसकेडीए विश्वविद्यालय व चेयरमैन क्यू.आर.टी. ने बताया कि प्रदेश के पश्चिमी जिलों के बहुसंख्यक किसानों की आजीविका जीरे की फसल पर निर्भर करती है, क्योंकि यह कम समय अवधि और न्यूनतम लागत में अधिक आमदनी देने वाली फसल है। देश का कुल उत्पादन में से सर्वाधिक 80 प्रतिशत जीरा राजस्थान एवं गुजरात में उगाया जाता है भारत में जीरा उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान तथा उत्पादकता में गुजरात का प्रथम स्थान है जबकि राजस्थान में जीरे की औसतन उपज 380 किलोग्राम प्रति हैक्टर है जो कि काफी कम है। डॉ. एस. एन. सक्सेना निदेशक एनआरसीएसएस अजमेर ने बताया कि वर्तमान समय में पश्चिमी राजस्थान में मसाला फसलों की तरफ लोगों का रुझान दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है इसके

लिए उन्नत किस्म के साथ साथ ही बीज उपचार करने की आवश्यकता बताई। डॉ वाई.के. शर्मा प्रधान वैज्ञानिक एवं सदस्य क्यूआरटी टीम ने बताया कि पश्चिमी राजस्थान प्रमुख जीरा उत्पादक क्षेत्र है जिसमें भविष्य में इसके बढ़ने की अपार संभावनाएं हैं।

डॉ प्रदीप पगारिया सह-निदेशक, प्रसार शिक्षा निदेशालय व उप-कुलसचिव कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर ने आये हुए अतिथियों का परंपरागत स्वागत करते हुए जिले की रूपरेखा के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की व जिले में होने विभिन्न फसलों, के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। साथ ही उन्होंने कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा विकसित विभिन्न नवीन तकनीकों के बारे में भी बताया। डॉ. रामावतार शर्मा प्रधान वैज्ञानिक आईसीएआर काजरी व क्यूआरटी सदस्य ने बताया की पश्चिमी राजस्थान मसाला फसलों के लिए बहुत ही अनुकूल पर्यावरणीय स्थिति है तथा भविष्य में भी इस क्षेत्र में मसाला फसलों के उत्पादन में वृद्धि की अपार संभावनाएं हैं। डॉ. राजेश शर्मा पूर्व-अधिष्ठाता स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बिकानेर व क्यूआरटी सदस्य ने बताया कि किसानों की आय दुगुनी करने में सबसे बड़ी आवश्यकता है लागत को कम करें एवं जैविक उत्पादन भी किसानों की आय दुगनी करने में अहम भूमिका निभाई जा सकती है। साथ ही उन्होंने समन्वित कृषि प्रणाली प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की बात करते हुए कहा कि आने वाला समय में समन्वित कृषि प्रणाली किसानों की आय एवं उत्पादन बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगा। इससे जलवायु में हो रहे बदलाव का असर भी कम किया जा सकता है। डॉ. ए.वी. अगलोदिया एसकेडीएयू दांतीवाड़ा व क्यूआरटी सदस्य ने किसानों को जीरा उत्पादन में आ रही विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की।

जीरा क्यूआरटी टीम की बैठक

मसाला फसलों के लिए अनुकूल है पर्यावरण

बाड़मेर। कृषि विज्ञान केंद्र गुड़ामलानी पर जीरा क्यूआरटी टीम की समीक्षा बैठक एसकेडीए विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. बीएस. चुंडावत की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में जीरा उत्पादकों के साथ कृषि वैज्ञानिकों ने भाग लिया। क्यूआरटी टीम के वैज्ञानिकों ने पश्चिमी जिलों की जलवायु, पर्यावरण को मसाला फसलों के अनुकूल बताते हुए भविष्य में जीरा सहित दूसरी फसलों का क्षेत्रफल बढ़ने की संभावना व्यक्त की है। बैठक में डॉ. चुडांवत ने कहा कि जीरा कम समयऔर न्यूनतम लागत में अधिक आमदनी देने वाली फसल है। देश का कुल उत्पादन में से सर्वाधिक 80 प्रतिशत जीरा राजस्थान ओर गुजरात में उगाया जाता है। राजस्थान में जीरे की

औसतन उपज 380 किलोग्राम प्रति हैक्टयर है जो कि काफी कम है। एनआरसीएसएस अजमेर के निदेशक डॉ. एसएन सक्सेना ने बताया कि पश्चिमी जिलों में किसानों का रूझान मसाला फसलों की ओर बढ रहा है। किसानों को प्रशिक्षित करके उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के सह प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. प्रदीप पगारिया ने जिले में होने विभिन्न फसलों के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान दी। एसकेआरएयू बीकानेर के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. राजेश शर्मा ने जैविक जीरा उत्पादन को प्रोत्साहन देने की बात बैठक में कही। बैठक में केवीके के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बीएल मीणा ने केन्द्र की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।